B.A - Part-II Psychology (Subsidiary) paper-II

Abnormal Psychology

Teacher - A.K. Sinha

Topic - Mental Mechanisms

मनोरचनाएँ (Mental Mechanisms) निम्नलिखित प्रकार के होते हैं।

(A) (Primary Mechanisms) प्राथमिक मनोरचनाएँ:- प्राथमिक मनोरचनाएँ निम्नलिखित हैं।

(1) दमन (Repression):- यह एक प्रकार की अचेतन प्रक्रिया है क्योंकि जितने भी अनैतिक, अवांछनीय, असामाजिक तथा घृणित भाव-विचार या इच्छाएँ आदि अचेतन मन में धकेल दिए जाते हैं तथा उनकी चेतन अभिव्यक्ति प्रतिबन्धित रहती है। चूंकि यह प्रक्रिया अचेतन स्वरूप की होती है इसलिए व्यक्ति इसके बारे में पूर्ण रूप से अनभिज्ञ होता है।

Page ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि:-

"The involuntary or spontaneous exclusion from conscious awareness of thoughts and impulses that are disturbing to the individual because of their painful and immoral nature are termed repression."

कहने का तात्पर्य है कि दमन की प्रक्रिया द्वारा कष्टकर या अनैतिक या अवांछनीय इच्छा एवं विचार अपने आप चेतन से हट कर अचेतन रूप से ही अचेतन में चले जाते हैं या दमित हो जाते हैं यही दमन प्रक्रिया कहलाता है।

परन्तु कुछ मनोवैज्ञानिकों ने इस प्रक्रिया को चमत्कारिक रूप से याद करना भी स्वीकार करते हैं। कारण के रूप में यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि जो अवांछित

अनैतिक तथा घृणित होकर या विचार अचेतन में धकेले जाते हैं वे वहाँ निष्क्रिय नहीं रहकर सक्रिय ही रहते हैं और मौका पाकर दैनिक जीवन की भूलें, स्वप्न, कल्पनाओं अथवा बिमारी के लक्षणों के रूप में प्रकट होते रहते हैं।

चेतनात्मक रूप से भुलाने की यह और प्रक्रिया है जिसे 'दलन' (Supression) कहा जाता है। परन्तु दमन (Repression) और दलन (Supression) में अन्तर यह है कि दलन की प्रक्रिया स्वेच्छा होती है अर्थात व्यक्ति जान-बूझ कर दुःखद तथा निराशाजनक इच्छाओं को दबाता है जिसकी जानकारी व्यक्ति को रहती है परन्तु दमन में यह प्रक्रिया अचेतन रूप से होजाती है जिसकी जानकारी व्यक्ति को नहीं होती है। दमन 'अवरोधन' (Inhibition) से भी भिन्न होता है क्योंकि अवरोधन में व्यक्ति ~~से~~ इच्छाओं को अपने चेतन में ही रोके रहता है।

दमन की क्रिया दो प्रकार की होती है:—

(क) प्राथमिक दमन (Primary repression):— जब व्यक्ति की जो इच्छा अचेतन में उत्पन्न होती है और बिना चेतन अभिव्यक्ति के अचेतन में ही दमित हो जाती है उसे प्राथमिक दमन की संज्ञा दी जाती है। इन इच्छाओं का सम्बन्ध प्रायः बाल्यावस्था की अनुभूतियों से रहता है।

(ख) द्वितीयक दमन (Secondary Repression):— व्यक्ति के अचेतन मन में कुछ ऐसी भी इच्छाएँ दमित रहती हैं जो कभी चेतन अवस्था

में भी, पर वे अचेतन में दमित कर दी गई है। इसे ही प्रतिक्रिया का गठन कहा जाता है।

इस प्रकार दमन एक प्रमुख मनोरचना (Mechanism) है जिसके द्वारा उपाहं (Id) और पराहं (Super Ego) की प्रवृत्तियों के बीच के पारस्परिक संघर्षों से उत्पन्न तनाव से व्यक्ति के व्यक्तित्व की सुरक्षा होती है। यह सुरक्षा दो प्रकार से होती है— एक तरफ पराहं (Super Ego) जिन इच्छाओं की अभिव्यक्ति पर प्रतिबन्ध लगाता है, वे इच्छाएँ अचेतन में भेज दी जाती हैं और इस प्रकार संघर्ष का तनाव दूर हो जाता है। दूसरी ओर दमित इच्छाएँ छद्म रूप में अप्रत्यक्ष ढंग से दैनिक जीवन की साधारण भूलों, स्वप्नों आदि के रूप में निष्कासित होती हैं। इस प्रकार दमन इन इच्छाओं की पूर्ति का एक अप्रत्यक्ष माध्यम का काम करती है। अतः दमन मानसिक संघर्षों के आघात की एक प्रमुख मनोरचना है जिससे अहं (Ego) के विखंडित होने या कुंठित होने की स्थिति से सुरक्षा होती है।